संसद के नए भवन की प्रथम बैठक में लोक सभा अध्यक्ष द्वारा उल्लेख

माननीय सदस्यगण, आज हमारे देश के लोकतान्त्रिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन है जब हम संसद के नए भवन में लोकसभा की पहली बैठक का आरंभ कर रहे हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमें संसद के पुराने और नए - दोनों ही भवनों में अपने संसदीय दायित्वों के सम्यक निर्वहन का अवसर मिला है, इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनने का अवसर मिला है। इस शुभ अवसर पर मैं आप सबको शुभकामनाएं देता हूँ, बधाई देता हूँ।

माननीय सदस्यगण, आज हम अपने देश के उन संस्थापकों, राष्ट्र निर्माताओं का स्मरण करते हैं, उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं, जिनके संघर्ष एवं बलिदान के कारण हमें आजादी मिली। उन्होंने हमें ऐसा संविधान दिया जो जनता को केंद्र में रखते हुए राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक की प्रगति को सुनिश्चित करता है।

माननीय सदस्यगण, जो हमारी श्रेष्ठ संसदीय परम्पराएं, परिपाटियाँ और अनुभव रहे हैं, अपने इस नए भवन में हम उन श्रेष्ठ परंपराओं को आगे बढ़ाएं, और जो हमारे अच्छे अनुभव नहीं रहे हैं, उनका त्याग करें।

हम यहाँ संसद की उच्च मर्यादा और प्रतिष्ठा को कायम करें, हम नए भवन में नए विचारों के साथ लोकतंत्र की संस्कृति को तथा चर्चा संवाद की श्रेष्ठ परंपराओं को स्थापित करें।

हम सदन में शालीनता और मर्यादा से अपने विचारों को रखें। सहमति - असहमति लोकतंत्र का मूल है, किन्तु हम उसे गरिमा के साथ व्यक्त करें, मुद्दों पर चर्चा करें। हमारा यह सदन स्वस्थ चर्चा-संवाद का केंद्र बने।

हमारे राजनैतिक और वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, लेकिन हमने देशहित में एक साथ मिलकर बड़े फैसले इसी सदन में लिए हैं।`

इसलिए मेरा आपसे आग्रह रहेगा कि इस नए भवन में हम ऐसे प्रतिमान स्थापित करें, जिनसे लोकतंत्र और लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनता का विश्वास और भरोसा और अधिक मजबूत हो।

आज हमारे सदनों की गतिविधियों को सूचना प्रौद्योगिकी और नई तकनीक के माध्यम से पूरा देश देख रहा है। इसीलिए, हम इस नए भवन में देश की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं के अनुरूप जनता के विश्वास और भरोसे को और जीतने का प्रयास करेंगे। उनके मुद्दों, उनकी आकांक्षाओं को और जिम्मेदारी के साथ मर्यादित तरीके से सदन में रखेंगे।

माननीय सदस्यगण, सदन के सुचारू संचालन में सभी माननीय सदस्यों का सहयोग मुझे निरंतर मिलता रहा है। मुझे आशा है कि नए संसद भवन के इस पावन कक्ष में भी अच्छी परंपराओं और परिपाटियों को लागू करने में और सदन के सुव्यवस्थित संचालन में आप सबका सहयोग मुझे प्राप्त होता रहेगा।

हमारा यह भवन हमारी विरासत, विविधता और आधुनिकता का भव्य समागम है। रिकॉर्ड समय में इस भवन का निर्माण सुनिश्चित करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। मैं भवन के निर्माण में योगदान के लिए भारत सरकार, लोक सभा सचिवालय, सहयोगी एजेंसियों तथा भवन के निर्माण कार्य से जुड़े श्रमवीरों को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

मुझे विश्वास है कि आज गणेश चतुर्थी के शुभ दिन पर हम नई ऊर्जा, नए उमंग और नए उत्साह के साथ एक नई शुरुआत करेंगे।

———